ISSN 2454-5163

प्रकाशन तिथि : 26 अप्रैल 2017, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 35, अंक 10, कुल पृष्ठ 28

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

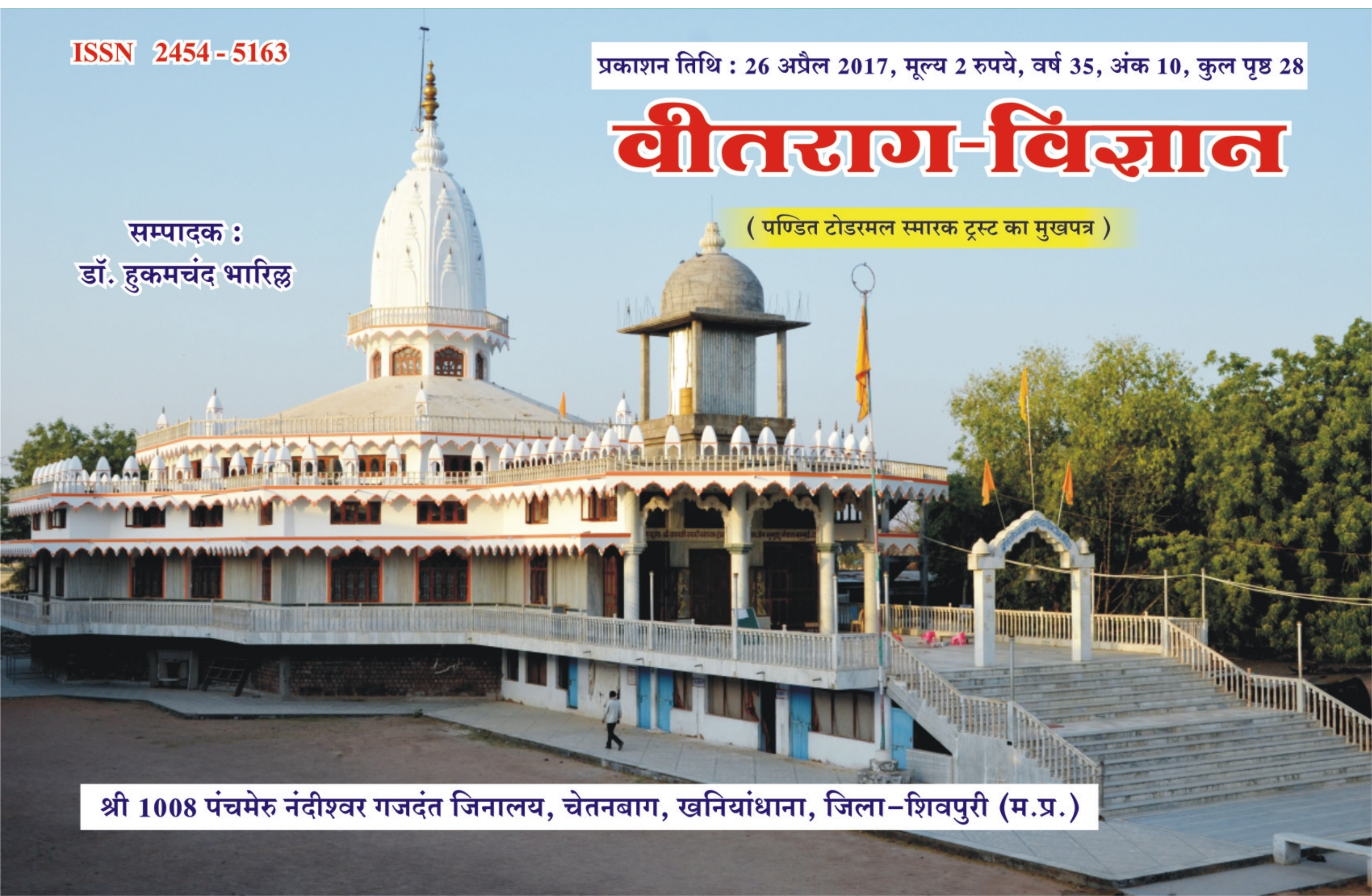

श्री 1008 पंचमेरु नंदीश्वर गजदंत जिनालय, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (405)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन :	251 रुपये
वार्षिक :	25 रुपये
एक प्रति :	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी :	7200
मराठी :	2000
कन्नड़ :	1000
कुल :	**10200**

साध्य की सिद्धि का साधन

देखो, यह साधक होने की रीति ! यह धर्म को साधने का उत्कृष्ट साधन ! अपने स्वभाव को ही साधन बनाकर अनन्त जीवों ने सिद्धपद को साधा है; वर्तमान में अनेक जीव उसीप्रकार सिद्धपद को साध रहे हैं और भविष्य में भी साधेंगे। स्वभाव साधन से बाहर अन्य साधन को जो ढूंढेगा उसे सिद्धपद की सिद्धि नहीं होगी, वह तो संसार का ही साधक रहेगा अर्थात् संसार में ही भटकेगा। यहाँ तो स्वभाव साधन समझकर साधक होकर अपने सिद्धपद को साधे - ऐसे जीवों के लिये बात है।

अनन्तगुणमूर्ति आत्मस्वभाव को ही जो अपना साधन मानता है, वह जीव निमित्त को, राग को, व्यवहार को अपना साधन नहीं मानता, इसलिये उससे लाभ नहीं मानता। जिसप्रकार पतिव्रता स्त्री अपने पति के सिवा अन्य पुरुष का संग स्वप्न में भी नहीं करती, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा अपने चैतन्य स्वामी के अतिरिक्त अन्य किसी को स्वप्न में भी अपने साधनरूप से स्वीकार नहीं करते। यही साध्य की सिद्धि का साधन है; अन्य किसी साधन से साध्य की सिद्धि नहीं होती। इसलिये आचार्यदेव कहते हैं - ''अनन्त चैतन्य जिसका चिह्न है ऐसी इस आत्मज्योति का हम निरन्तर अनुभव करते हैं, क्योंकि उसके अनुभव बिना अन्यप्रकार से साध्य आत्मा की सिद्धि नहीं है।

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 535-536

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 35 (वीर नि. संवत् - 2543) 405 अंक : 10

चिन्मूरत दृगधारी ...

चिन्मूरत दृगधारी की मोहे, रीति लगत है अटापटी।।टेक।।

बाहिर नारकी कृत दु:ख भोगै, अंतर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस, परिनति तैं नित हटाहटी।।1।।

ज्ञानविरागशक्ति तैं विधिफल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदननिवासी तदपि उदासी, तातैं आस्रव छटाछटी।।2।।

जे भव हेतु अबुध के ते तस, करत बंध की झटाझटी।
नारक पशु तिय षँढ विकलत्रय, प्रकृतिन की है कटाकटी।।3।।

संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुन की 'दौलत' के, लगी रहै नित रटारटी।।4।।

- कविवर पण्डित दौलतरामजी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री नेमिनाथ दिग.जैन नया मंदिर ट्रस्ट और अ.भा. जैन युवा फैडरेशन,
खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2017 से 7 जून 2017 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी 473990 (म.प्र.) मोबाइल -09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122108 (आकाश शास्त्री)

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

इसी भाव का पोषक एक कलश भी आत्मख्याति टीका में प्राप्त होता है।

(मालिनी)

यदि कथमपि धारावाहिना बोधनेन,
ध्रुवमुपलभमान: शुद्धमात्मानमास्ते।
तदयमुदयदात्माराममात्मानमात्मा;
परपरिणतिरोधाच्छुद्धमेवाभ्युपैति ।।१२७।।

(रोला)

भेदज्ञान के इस अविरल धाराप्रवाह से।
कैसे भी कर प्राप्त करे जो शुद्धातम को।।
और निरन्तर उसमें ही थिर होता जावे।
पर परिणति को त्याग निरंतर शुध हो जावे।। १२७।।

यदि किसी भी प्रकार से अर्थात् काललब्धि आने पर तीव्र पुरुषार्थ करके धारावाही ज्ञान से शुद्ध आत्मा को निश्चलतया अनुभव किया करे तो यह आत्मा परपरिणति के निरोध होने से नित्य वृद्धिंगत आनन्दवाले आत्मा को शुद्ध ही प्राप्त करता है।

इस कलश में आचार्यदेव यह कहना चाहते हैं कि निरंतर धारावाहिक रूप से प्रवर्तित ज्ञान ही शुद्धात्मा की प्राप्ति का एकमात्र अमोघ उपाय है। **देशनालब्धि से लेकर केवलज्ञान की प्राप्ति तक एकमात्र पुरुषार्थ, ज्ञान की यह धारावाहिक प्रवृत्ति ही है।**

सर्वप्रथम जब यह आत्मा देव-शास्त्र-गुरु के माध्यम से **देशनालब्धि को प्राप्त होता है;** उनकी वाणी में प्रतिपादित वस्तुस्वरूप को विशेषकर

आत्मवस्तु को विकल्पात्मक ज्ञान में समझपूर्वक सम्यक्निर्णय करता है और **अपने ज्ञानोपयोग को उसी में लगाता है; तब इसी पुरुषार्थ के बल से काललब्धि आने पर प्रायोग्यलब्धि से गुजरता हुआ करणलब्धि को प्राप्त होता है,** तदुपरांत सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान को प्राप्त करता है, सम्यक्त्वाचरण चारित्ररूप परिणमित होता है।

सम्यग्दर्शन प्राप्ति के पूर्व जो धारावाहिकज्ञान देशना पर आधारित था, आगमानुसार था, विकल्पात्मक था; सम्यग्दर्शन प्राप्ति के बाद वह अनुभवजन्य हो जाता है, साक्षात् हो जाता है, प्रत्यक्ष हो जाता है, सम्यक् हो जाता है।

यह सम्यग्ज्ञान आगे धारावाहीरूप से विद्यमान रहता है तो चारित्रमोह को शिथिल करता हुआ आगे बढ़ता है और नित्य वृद्धिंगत यह धारावाही ज्ञान ही एक दिन केवलज्ञान के रूप में परिणमित हो जाता है।

अत: यह कहना अनुचित नहीं है कि देशनालब्धि से लेकर केवलज्ञान की प्राप्ति तक एकमात्र आत्मोन्मुखी पुरुषार्थ ज्ञान की यह धारावाहिकता ही है। **सम्यग्दर्शन के पूर्व यह धारा देशनाधारित होती है और सम्यग्दर्शन के बाद आत्मानुभवाधारित हो जाती है।**

एक तो, जिसमें बीच में मिथ्याज्ञान न आये, ऐसा सम्यग्ज्ञान धारावाही ज्ञान है।

दूसरा **एक ही ज्ञेय में उपयोग उपयुक्त रहने की अपेक्षा से ज्ञान की धारावाहिकता कही जाती है अर्थात् जहाँ तक उपयोग एक ज्ञेय में उपयुक्त रहता है, वहाँ तक धारावाही ज्ञान कहलाता है; इसकी स्थिति (छद्मस्थ के) अंतर्मुहूर्त ही है, तत्पश्चात् वह खण्डित होती है।**

इन दो अर्थों से जहाँ जैसी विवक्षा हो वहाँ वैसा अर्थ समझना चाहिए। अविरत सम्यग्दृष्टि इत्यादि नीचे के गुणस्थानवाले जीवों के मुख्यतया पहली अपेक्षा लागू होगी और श्रेणी चढ़नेवाले जीव के मुख्यतया दूसरी अपेक्षा लागू होगी, क्योंकि उसका उपयोग शुद्ध आत्मा में ही उपयुक्त है।

अविरत सम्यग्दृष्टि वगैरह नीचे के गुणस्थानवाले अर्थात् चौथे, पाँचवें व छठवें गुणस्थानवाले जीवों के धारावाही सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान कहा है, वह पहले कथन की अपेक्षा समझना। **यहाँ उपयोग यदा-कदा ही अन्तर सन्मुख होता है; अत: यहाँ उपयोग की अपेक्षा लागू नहीं पड़ती।**

श्रेणी चढ़नेवाले जीवों के मुख्यतया दूसरी अपेक्षा लागू पड़ती है। यद्यपि उनके भी (दसवें गुणस्थान तक) अबुद्धिपूर्वक होनेवाला राग तो होता है, पर उसे गौण करके उपयोग की एकाग्रता की मुख्यता से ऐसा कहा गया है।

आठवें गुणस्थान से उपयोग की धारा स्थिर होती है, उस गुणस्थान में जहाँ उपयोग लगाते हैं, वहीं स्थिर रहता है, वहाँ से हटता नहीं है। **अत: वहाँ उपयोग की स्थिरता की अपेक्षा धारावाही ज्ञान कहा है।**

इसप्रकार धर्म की धारा दो प्रकार की हुई – प्रथम तो चौथे, पाँचवें एवं छठवें गुणस्थानावालों को जो निर्मल सम्यग्ज्ञान प्रकट हुआ, वह **धारावाही** है। भले उपयोग राग में, पर में जाये; परन्तु अन्तर में सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान प्रगट हो गया है, वह अब छूटता नहीं है।

दूसरे आठवें गुणस्थान से जो उपयोग अन्तरात्मा में आया, वह वहाँ से नीचे न गिरकर ऊपर चढ़कर केवलज्ञान पा लेता है। **आठवें गुणस्थान में क्षपकश्रेणी** से उपयोग धारावाहिक रहता है और केवलज्ञान को प्राप्त होता है।

यदि हम गहराई से ध्यान दें तो इस कलश में आत्मा से परमात्मा बनने की सम्पूर्ण प्रक्रिया स्पष्ट कर दी गई है। इस एक ही कलश में – छन्द में **आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का क्रमिक विकास सम्पूर्णत: दर्शा दिया गया है।**

सर्वगत आत्मा

(१०)

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं।
णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगयं।।

(हरिगीत)

यह आत्म ज्ञानप्रमाण है अर ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है।
हैं ज्ञेय लोकालोक इस विधि सर्वगत यह ज्ञान है॥

आत्मा ज्ञानप्रमाण है और ज्ञान ज्ञेयप्रमाण कहा गया है। ज्ञेय तो सम्पूर्ण लोकालोक है। यही कारण है कि लोकालोकरूप ज्ञेय को जानने वाले ज्ञान को भी सर्वगत कहा गया है।

यद्यपि आत्मा अपने असंख्य प्रदेशों से बाहर नहीं जाता, तथापि **सब को जानने वाला होने से सर्वगत कहा जाता है।**

यह प्रवचनसार नामक परमागम की २३वीं गाथा है।

इस गाथा में यह बताया गया है कि अपने आत्मप्रदेशों में सीमित रहते हुए भी ज्ञान सम्पूर्ण लोकालोक को जान लेने के स्वभाववाला है और सम्पूर्ण लोकरूप ज्ञेय अपने में रहते हुए भी ज्ञान के द्वारा जान लिये जाने के स्वभाववाले हैं।

इसप्रकार आत्मा, ज्ञान और ज्ञेय – ये तीनों बराबर हैं। इस अपेक्षा से आत्मा को सर्वगत कहा जाता है।

ज्ञान और ज्ञेयों का ऐसा विचित्र स्वभाव है कि दूर रहकर ज्ञान ज्ञेयों को जान लेता है और ज्ञेय ज्ञान में जान लिये जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि आत्मा, ज्ञान गुण और उसकी पूर्ण विकसित पर्याय केवलज्ञान – ये तीनों क्षेत्र की अपेक्षा बराबर ही हैं।

ज्ञान सबकुछ जानता है, अत: सर्वगत है। इसी बात को ऐसा भी कहा जा सकता है कि **सभी जगत आत्मगत है; क्योंकि वह आत्मा के द्वारा जाना जाता है।**

लोकालोक को जानने से आत्मा लोकालोक में पहुँच गया – ऐसा कहो या लोकालोक आत्मा में आ गया – ऐसा कहो, दोनों एक ही बात है। ज्ञेय-ज्ञायकरूप निमित्त-नैमित्तिक संबंध होने से उक्त कथन व्यवहारनय का ही कथन है।

परमार्थ से देखें तो न तो ज्ञान ज्ञेयों के पास जाता है और न ज्ञेय ज्ञान के पास आते हैं। दोनों अपनी-अपनी जगह पर रहते हुए ही ज्ञान ज्ञेयों को जान लेता है और ज्ञेय ज्ञान के जानने में आ जाते हैं। वस्तु का स्वरूप ऐसा ही है।

ऐसे अनेक मत हैं जो ऐसा कहते हैं कि आत्मा सर्वगत अर्थात् सर्वव्यापी है। सारा जगत आत्मामय है; परन्तु जैनदर्शन कहता है कि प्रत्येक वस्तु पूर्णत: स्वतंत्र पदार्थ है। प्रत्येक आत्मा असंख्यातप्रदेशी हैं। संसारावस्था में प्राप्त देह में उसी के आकार में रहते हैं और सिद्ध अवस्था में अन्तिम देह के आकार में किंचित् न्यून अवस्था में रहते हैं।

सभी जीव सर्वज्ञस्वभावी हैं। वे सभी पदार्थों को बिना किसी के सहयोग के जान लेने के स्वभाववाले हैं। इस अपेक्षा उन्हें सर्वव्यापी या सर्वगत कहते हैं। सर्वगत का अर्थ कहीं जाना-आना नहीं है, अपितु सभी को जान लेना या जान लेने के स्वभाववाला है।

केवली भगवान अलोकाकाश में गये बिना, उसे जान लेने के स्वभाव के हैं, जान लेते हैं। अलोकाकाश भी लोकाकाश में आये बिना लोकाकाश में रहने वाले केवलियों के ज्ञान में जान लिया जाता है। वस्तु का स्वरूप ही ऐसा है।

ज्ञान लोकालोक को जानता है। ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है अर्थात् जितने ज्ञेय हैं; उन सभी को ज्ञान जानता है; इस अपेक्षा से ज्ञान ज्ञेयप्रमाण है।

इसप्रकार जानने की अपेक्षा से ही आत्मा को सर्वगत कहा गया है।

यदि कोई ऐसा कहे कि ज्ञान बड़ा है और आत्मा छोटा; क्योंकि ज्ञान तो लोकालोक में चला गया, पर आत्मा तो शरीर के प्रदेशों में ही रहता है। वह लोकाकाश के बाहर तो जा नहीं सकता है।

यदि कोई ऐसा कहे कि हम ज्ञान को छोटा मानेंगे और आत्मा को बड़ा; क्योंकि ज्ञान जैसे अनंत गुण आत्मा में है। ज्ञान आत्मा का अनंतवाँ भाग है; क्योंकि आत्मा अनंत गुणों का पिण्ड है।

ज्ञान को छोटा मानने पर ज्ञान की मर्यादा के बाहर जो आत्मा होगा, वह आत्मा अज्ञानरूप हो जाएगा; परन्तु आत्मा तो ज्ञानस्वरूप ही है।

आचार्य कहते हैं कि **ज्ञान का ऐसा स्वभाव है कि वह ज्ञेयों में गये बिना ही ज्ञेयों को जान लेता है और ज्ञेयों का ऐसा स्वभाव है कि वे अपनी जगह रहे और ज्ञान में जाने जावे।**

अरे भाई ! दूर रहकर भी ज्ञान ज्ञेयों को जान लेता है तथा ज्ञेय ज्ञान में जान लिए जाते हैं – ज्ञान का तथा ज्ञेयों का ऐसा ही विचित्र स्वभाव है।

ज्ञेय का स्वभाव है ज्ञान में गये बिना अपना स्वभाव/स्वरूप भासित करा दे एवं ज्ञान का यह स्वरूप है कि ज्ञेयों के पास गये बिना, उनमें हस्तक्षेप किए बिना उनके स्वरूप को जान ले।

ऐसा जो ज्ञान का स्वभाव है; वह अतीन्द्रिय ज्ञान में प्रगट हो गया है। अतीन्द्रिय ज्ञान में यह सामर्थ्य है कि वह सुमेरु पर्वत के पास गए बिना भी उसे जान लेगा। सुमेरु पर्वत को तोड़े बिना उसके भीतर क्या है? वह उसे भी जान लेगा। ऐसे जानने में परज्ञेय को कभी कोई समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती।

ऐसे ही ज्ञान के जानने से यदि ज्ञेयों को भी कोई समस्या होती तो ज्ञेय भी ऐतराज करते; किन्तु उन्हें तो कोई समस्या नहीं है; क्योंकि ज्ञान उसके पास आएगा भी नहीं और ज्ञेयों को भी ज्ञान के पास जाना नहीं है, ज्ञेय अपना कार्य करते रहेंगे और सर्वज्ञ भगवान उसे जान लेंगे – ज्ञान का स्वभाव ऐसा ही है।

(क्रमशः)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	गुरुदेवश्री जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम-अहमदाबाद	गुरुमंथनवाणी शिविर
23 जुलाई से 1 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

छहढाला प्रवचन

निजात्म-ध्यान की प्रेरणा

पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौं मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई।।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अहो ! देखो तो सही ! सन्त कैसे प्रेम से आत्महित के लिए प्रेरित कर रहे हैं। अरे ! ऐसे आत्मा का प्रेम लाकर जीव ने कभी उसकी बात सुनी नहीं। सुना तो वास्तव में तब कहा जाय, जबकि अपने में वैसा भाव प्रकट करके अन्तर में अनुभव करे। चैतन्य की बात सुनने पर भी जीव विषय-कषाय के वेदनरूप भाव में ही रुका रहे अर्थात् बन्धभाव में ही रुका रहे और अबन्धरूप चैतन्यभाव प्रकट न करे, उसने एकत्व-विभक्त आत्मा की बात वास्तव में सुनी नहीं, उसने तो काम-भोग-बंध की विकथा ही सुनी है, उसका ही प्रेम किया है। अनादिकाल से जीव ने यही किया है। पर से भिन्न होकर चैतन्य के एकत्व में जो आया उसने ही अपूर्व भाव से एकत्व स्वभाव की बात यथार्थ सुनी है और उसी ने अनुभवी-ज्ञानी की सच्ची सेवा की है। इसके बिना मात्र शुभभाव करने को तो सम्यग्ज्ञानी की सेवा भी नहीं कहते और 'ज्ञान' की सेवा नहीं की उसने तो राग का ही सेवन किया है। इसलिए कहते हैं कि पुण्य-पाप से पार चैतन्य तत्त्व को पहिचानो – यही सबका सार है।

सम्यग्दर्शन पर्याय में निमित्त का, राग का या भेद का आश्रय नहीं है, वह तो एक अखण्ड ज्ञायक तत्त्व का आश्रय करके उसमें एकता करता है। सम्यग्दृष्टि

जीव अपने शुद्धात्मा की प्रतीति कभी नहीं छोड़ता और एक समय भी रागादि अशुद्ध भावरूप से अपने को नहीं अनुभवता। ऐसा सम्यग्दर्शन और भेदज्ञान जैनधर्म का सार है। इसमें ही वीतरागता होती है। वीतरागता ही शास्त्रों का तात्पर्य है। आत्मा का शुद्धस्वरूप सर्व पर से अत्यन्त भिन्न है, उसमें वीतरागता भरी है, राग का अंश भी चैतन्य में नहीं है। ऐसे चैतन्य स्वरूप की अनुभूति बिना अनन्त बार बहुत राग कर करके क्या पाया ? अकेला दु:ख पाया, लेश भी सुख नहीं पाया, इसलिए अब दु:ख से परिमुक्त होकर सुखी होने के अर्थ हे जीवों ! तुम जगत के सभी द्वन्द-फन्द छोड़कर निजात्मा का ध्यान करो।

कब ध्यावें ? नित्य ध्वाओ, एक क्षण भी आत्मा को पुण्य-पाप वाला मत ध्यावो। सदा आत्मा को पुण्य-पाप से पार चैतन्य स्वरूप ही ध्यावो, यही मुमुक्षु का कर्तव्य है। 'शुभराग नित्य करो' ऐसा नहीं कहा, अपितु राग रहित शुद्धात्मा को 'नित्य ध्यावो' ऐसा कहा है। रागरूप से आत्मा को एकक्षण भी मत ध्यावो। चैतन्य और राग एकरूप भासित होना ही संसार का मूल है। पुण्य-पाप का भाव होते समय भी अपने शुद्धात्मा की श्रद्धा-ज्ञान नहीं छूटते, सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान तो पुण्य-पाप से छूटे ही हैं। आत्मा के ध्यान से ऐसे सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान प्रकट करके, धर्मी उनको नित्य ध्याता है। यही श्रावकों का प्रथम कर्तव्य है। श्रावक को, धर्मी गृहस्थ को भी श्रद्धा-ज्ञान में ध्येयपने निरन्तर अपना शुद्धात्मा वर्तता है। शुद्धात्मा का ऐसा धर्मध्यान गृहस्थ को भी होता है।

जगत के द्वन्द-फन्द को तोड़ने के लिए कहा और पुण्य-पाप के फल में हर्ष-शोक छोड़ने के लिए कहा, तो जगत के उस द्वन्द-फन्द को कौन छोड़े ? पुण्य-पाप से पार चैतन्य मात्र मैं हूँ – ऐसा जिसने अन्तर में जाना हो, वही अपने आत्मा को ध्याकर संसार के फन्दे से छूट जाता है। जिसको पुण्य के फल में मिठास लगे, शुभराग में रस लगे, वह जीव संसार के फन्दे को नहीं तोड़ सकता।

भगवान ! तेरे आत्मा में ही सिद्ध भगवान बैठा है, केवलज्ञान तेरे आत्मा में

(शेष पृष्ठ 16 पर ...)

नियमसार प्रवचन –

श्री माधवसेनाचार्य को नमस्कार

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार के प्रारंभ में टीकाकार मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव श्री माधवसेन आचार्यदेव को श्लोक द्वारा नमस्कार करते हैं। इसी श्लोक पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

श्लोक मूलत: इसप्रकार है –

नमोऽस्तु ते संयमबोधमूर्तये, स्मरेभकुम्भस्थलभेदनाय वै।
विनेयपंकेजविकाशभानवे, विराजते माधवसेनसूरये।।१०८।।

कामगज के कुंभथल का किया मर्दन जिन्होंने।
विकसित करें जो शिष्यगण के हृदयपंकज नित्य ही।।
परम संयम और सम्यक्बोध की हैं मूर्ति जो।
हो नमन बारम्बार ऐसे सूरि माधवसेन को।।१०८।।

संयम और ज्ञान की मूर्ति, कामरूपी हाथी के कुम्भस्थल को भेदनेवाले तथा शिष्यरूपी कमल को विकसित करने में सूर्य के समान सुशोभित हे माधवसेन सूरि ! आपको नमस्कार हो।

(गतांक से आगे....)

संयम और ज्ञान की मूर्ति, कामरूपी हाथी के कुम्भस्थल को भेदनेवाले और शिष्यरूपी कमल को विकसित करने में सूर्य के समान विराजमान (शोभायमान) माधवसेन सूरि ! तुम्हें नमस्कार हो।

कैसे हैं माधवसेन आचार्यदेव ? माधवसेन आचार्यदेव संयम और ज्ञान की मूर्ति हैं, अतीन्द्रिय आत्मा के अमृतरस में मस्त हैं, टंकोत्कीर्ण चैतन्यमूर्ति हैं। आचार्यदेव को विषयवासना अंशमात्र भी उठती नहीं थी। काम की वासना उठती है और उसे भेदते हैं – यह तो कथनशैली है, वास्तव में तो स्वभाव का उग्र आश्रय करके अनन्तर उत्तरसमय में विकार को उत्पन्न ही न होने देना, तब ही विकार का नाश किया कहा जाता है। ऐसे माधवसेनसूरि, स्वभाव के उग्र-आश्रयस्वरूप,

वीतरागी अमृतदशा में झूल रहे हैं।

माधवसेनसूरि शिष्यरूपी कमल को खिलाने में सूर्यसमान हैं। जैसे – कमल को खिलाने में सूर्य निमित्त है, काष्ठ को खिलाने में नहीं; उसीप्रकार आत्मा के भानवाले – आत्मा को समझने वाले शिष्य को गुरु निमित्तमात्र हैं। ऐसे विराजमान शोभायमान – माधवसेनसूरि को पहचानकर नमस्कार किया है, अकेला बाह्य-नमस्कार नहीं किया है।

अब, सकलव्यवहारचारित्र और उसके फल की प्राप्ति से प्रतिपक्ष ऐसा जो शुद्धनिश्चयनयात्मक परमचारित्र, उसका प्रतिपादन करने वाला परमार्थप्रतिक्रमण अधिकार कहा जाता है। यहाँ प्रारंभ में पंचरत्न का स्वरूप कहते हैं।

मुनि को आत्मा का सम्यग्दर्शन तो प्रथम हो ही गया है, तत्पश्चात् तीन कषाय का अभाव होकर आत्मरमणतास्वरूप चारित्र भी होता है – ऐसे मुनि को जो शुभविकल्प उठता है, वह व्यवहारचारित्र है। व्यवहारचारित्र का फल बंधन है, क्योंकि वह राग है। आत्मा के शुद्धवीतरागीचारित्र से पंचमहाव्रतरूप व्यवहारचारित्र विरोधी है। आत्मा का चारित्र तो वीतरागी शुद्धपरिणति है और उसका फल मोक्ष है। पंचमहाव्रत का फल पुण्यबंध है, उसका फल मुक्ति नहीं।

(१) व्यवहारचारित्र राग है, (२) उसका फल बंधन है, (३) निश्चयचारित्र अराग है, (४) उसका फल मुक्ति है। – ऐसे चार बोल कहे।

इसप्रकार आत्मा के भानसहित वीतरागी रमणता ही वीतराग का मार्ग है। महाविदेहक्षेत्र में यह मार्ग आज भी प्रवर्त्त रहा है। जिसको इन्द्र मानते हैं, चक्रवर्ती मानते हैं, गणधर आराधते हैं – ऐसा तीन लोक में यह एक ही मार्ग है, अन्यजन अज्ञान से यद्वा-तद्वा मोक्ष का मार्ग मानते हैं, वह यथार्थ मोक्षमार्ग नहीं है; उससे आत्मा का किंचित् भी हित नहीं है, उलटा परिभ्रमणवर्द्धक ही है।

जितना व्यवहारचारित्र का अधिकार कहा है, वह सब राग है, विकल्प है, बंध का कारण है। विषय-कषाय की विशेष हीनता तथा देव-शास्त्र-गुरु की तरफ का शुभभाव व्यवहार है, वह भी मेरा कर्त्तव्य नहीं है – ऐसे भानवाले को जो विकल्प होता है, वह व्यवहार कहा जाता है।

प्रश्न :– व्यवहार को तो तीर्थ कहा जाता है न?

उत्तर :– स्वभाव का आश्रय करके व्यवहार का अभाव करना वह तीर्थ है। व्यवहार को तीर्थ कहना वह निमित्त का कथन है, किन्तु वस्तुस्वरूप ऐसा नहीं है।

यहाँ निमित्त या शुभभाव से लाभ माननेवाले की तो बात ही नहीं है। यहाँ तो शुद्धपर्याय का आश्रय करने से लाभ माने तो भी मिथ्यात्व है; कारण कि पर्याय में से पर्याय उत्पन्न नहीं होती, इसलिए जीवादि सात तत्त्व परद्रव्य होने से उपादेय नहीं – ऐसा कहा है। इसमें संवर, निर्जरा और मोक्ष पर्याय भी आ गई। मैं परिपूर्ण ज्ञायक हूँ – ऐसा विकल्प वह जीव, शरीरादि अजीव तथा संवर, आस्रवादि एकसमय जितनी शुद्ध-अशुद्ध पर्याय है। त्रिकाली द्रव्यस्वभाव के अतिरिक्त किसी भी पर्याय का आश्रय लेने पर राग होता है, इसलिए उसे भी यहाँ परद्रव्य कहा है, तथा त्रिकाली ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मद्रव्य का आश्रय लेने पर निर्मल वीतरागीपर्याय प्रगट होती है, इसलिए उस एक को ही स्वद्रव्य कहा है।

पुनश्च, मैं कारणशुद्धज्ञायकपरमात्मा हूँ – ऐसा विकल्प भी भेद होने से परद्रव्य है। अरहन्त, सिद्ध आदि पंचपरमेष्ठी तो परद्रव्य हैं ही; इसके अतिरिक्त संवर, निर्जरा और मोक्ष भी परद्रव्य है, क्योंकि वह एकसमय की पर्याय है और उसके आश्रय से राग उत्पन्न होता है, अतः वह भी उपादेय नहीं है। त्रिकाली आत्मस्वभाव के आश्रय से राग टूटता है, अतः वह एक ही स्वद्रव्य है।

प्रश्न :– आश्रय लेने वाला कौन है – द्रव्य है या पर्याय?

उत्तर :– आश्रय लेनेवाली तो पर्याय ही है; परन्तु पर्याय का आश्रय पर्याय कहाँ से ले? पर्याय सदा एकसमय की ही होती है, एक साथ दो समय की पर्यायें नहीं होती। पूर्वसमय की पर्याय चली गई और अभी अगले समय की पर्याय उत्पन्न हुई नहीं, तो वर्तमान पर्याय किसका आश्रय ले? पर्याय की ओर लक्ष्य करने जाय तो राग उत्पन्न होता है। देखो! पर्याय का ज्ञान करना वास्तव में राग का कारण नहीं है, क्योंकि जानने के लिए ही व्यवहारनय का विषय है। किन्तु पर्याय के जानने के समय उसकी ओर झुकाव – उसका आश्रय होता है, तब राग होता है। व्यवहारनय न हो और उसका विषय न हो – ऐसा नहीं है, किन्तु उसका आश्रय लेने से राग हो

जाता है, इसलिए वह कल्याणकारी नहीं है।

शुद्धनिश्चयनयात्मक परमचारित्र का प्रतिपादन करनेवाले परमार्थप्रतिक्रमण अधिकार में प्रथम पंचरत्न का स्वरूप वर्णन किया।

वास्तव में राग से विमुख होकर ज्ञातास्वभाव में लीन होने को प्रतिक्रमण कहा जाता है। राग से विमुख हुआ – यह भी व्यवहार का कथन है। सचमुच तो ज्ञायक स्वभाव में लीन होने पर राग उत्पन्न ही नहीं हुआ, तब राग से विमुख हुआ – ऐसा कहा जाता है। यहाँ शुद्धनिश्चयचारित्र के अधिकार में, शुद्धस्वभाव का भान करके उसमें लीन हुआ अर्थात् राग से विमुख हुआ – ऐसा कहा जाता है। यह परमार्थप्रतिक्रमण है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 12 का शेष ...)

बैठा है, किसी दूसरे के पास से तुझे क्या लाना है ? चैतन्य तत्त्व का आश्रय करने पर तू स्वयं सादि-अनंत काल तक केवलज्ञान और सिद्धदशारूप परिणमन करे – ऐसा ही तेरा अचिन्त्य स्वभाव है। अब तुझे राग के पास से या किसी अन्य के पास क्या लेना है ? अनन्त अतीन्द्रिय आनन्द, अनन्त केवलज्ञान अनन्त सम्यक्त्व – ऐसी सामर्थ्य तेरे गुण में ही है, ऐसे अनन्त गुणों का पिण्ड तू महान चैतन्य वस्तु है। तुझमें राग का अंश भी नहीं है। अन्तर्मुख होकर ऐसे परम महिमावंत आत्मवस्तु को श्रद्धा-ज्ञान में लेना ही भव से पार होने का उपाय है।

पुण्य-पाप का आलम्बन लेने वाला ज्ञान मोक्ष का कारण नहीं, चैतन्य स्वभावरूप सत्ता का आलम्बन लेनेवाला ज्ञान ही मोक्ष का कारण है। पुण्य-पाप तो संसार का ही फन्द है, उसे तो चैतन्य के ध्यान से तोड़ना है। चैतन्य स्वरूप आत्मा को जानने पर रागादि के फन्द से ज्ञान छूट जाता है। स्वपूर्वक पर का ज्ञान ही प्रमाण ज्ञान है, ऐसे भेदज्ञान से सम्यग्ज्ञान का आराधन करो। सम्यग्दर्शन के साथ ऐसा सम्यग्ज्ञान होता है, उसको सम्यग्दर्शन के बाद भी ठेठ केवलज्ञान तक आराधो। पुण्य-पाप से सदा भिन्न ज्ञान की आराधना करो। वह तो मोक्षमार्ग है और वही द्वादशांग का सार है। वही सच्चे सुख का एकमात्र उपाय है। **(क्रमशः)**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

समयसार कलश 262

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को इसी अंक से क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। भूमिका के रूप में समयसार कलश 262 व 263 से प्रारम्भ किया गया प्रकरण पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

(गतांक से आगे....)

कुछ लोग पूछते हैं कि – आत्मा को कैसे देखें? जब भी आँख बन्द करके अन्तर में झाँकते हैं तो अंधेरा-अंधेरा सा दिखता है, आत्मा तो कहीं दिखाई नहीं देता।

उनसे कहते हैं कि – यह 'अंधेरा' है, यह किसने जाना? और किससे जाना? आत्मा ने ज्ञान से ही तो जाना कि – 'यह अंधेरा' है, इसी से सिद्ध हो गया कि अंधेरे को जाननेवाला अन्दर में कोई ज्ञानस्वरूप आत्मा है।

दूसरे प्रकार से कहें तो – आत्मा जानता नहीं है' यह निर्णय किसने किया? यह निर्णय भी तेरे ज्ञान में ही हुआ है न? भाई! स्वस्वरूप में अन्तर्मुख दृष्टि करे तो अवश्य ही देखने-जानने वाला भगवान आत्मा दिखाई देता ही है, अनुभव में आता ही है।

भावार्थ यह कि ज्ञानमात्र आत्मवस्तु को अनेकान्तमय ज्ञानमात्र कहने से ही आत्मा ज्ञानस्वरूप से तत् और परज्ञेयस्वरूप से अतत् स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से सत् और परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से असत् इत्यादि अनेक धर्म आत्मा में सिद्ध हो जाते हैं। मैं वस्तुपने एक हूँ – ऐसा सिद्ध हो जाता है।

इसप्रकार ज्ञानमात्र कहते ही आत्मवस्तु अनेकान्तमय सिद्ध हो जाती है। इन चौदह बोलों से आचार्यदेव ने संक्षेप में आत्मा का वास्तविक दर्शन

कराया है।

अनादिकाल से प्राणी स्वयं ही या एकान्तवादियों का उपदेश सुनकर ज्ञानमात्र आत्मतत्त्व संबंधी अनेक प्रकार से पक्षपात करके ज्ञानमात्र आत्मतत्त्व का नाश करता है। १. कोई तो सर्वथा पर्याय को ही आत्मा मानता है। २. दूसरे कोई सर्वथा नित्य ध्रुवद्रव्य को ही आत्मा कहते हैं, अन्य ३. कोई आत्मा को सर्वथा एकरूप मानता है तो ४. कोई सर्वथा अनेकरूप मानता है तथा ५. कोई स्व-पर को मिलाकर एकरूप मानता है। इसप्रकार पक्षपात करके एकान्तवादी अपने आत्मतत्त्व का नाश करता है अर्थात् वस्तुतत्त्व को प्राप्त नहीं कर पाता।

कुछ लोग कहते हैं कि उपादान में अनेकप्रकार की योग्यतायें हैं। इनमें कई योग्यतायें निमित्ताधीन हैं। वे भी वस्तु के सही स्वरूप को नहीं समझते।

अब कहते हैं कि आत्मवस्तु को जो ज्ञानमात्र कहा है, उसका अर्थ अकेला ज्ञान गुण ही आत्मा में है - ऐसा नहीं समझना। उसके साथ दर्शन, सुख, वीर्य, अस्तित्व-नास्तित्व, वस्तुत्व आदि अनन्तधर्म हैं। यदि अपनी ओर देखकर-अनुभव करके देखें तो ज्ञानमात्र वस्तु स्वतः अनेक धर्मयुक्त प्रत्यक्ष अनुभवगोचर होती है।

अहाहा....! मैं 'स्व' से हूँ और 'पर से' नहीं हूँ, ज्ञानस्वरूप से हूँ और परज्ञेय से नहीं - ऐसा यथार्थ वस्तुस्वरूप जानकर नित्य, ध्रुव ज्ञानस्वभाव के सन्मुख होकर परिणमन करते हुए आत्मा का अनुभव होता है और उस अनुभव में ज्ञान की, आनन्द की, श्रद्धा की, स्थिरता की - आदि अनेक पर्यायें प्रत्यक्ष वेदन में आती हैं; क्योंकि प्रत्यक्ष होना, स्वानुभूति में ज्ञात होना आत्मा का स्वभाव ही है।

अहाहा...! आत्मवस्तु स्वानुभवगोचर होने पर - मैं द्रव्यस्वरूप से एकरूप हूँ, पर्याय से अनेक हूँ - ऐसा ज्ञान में यथार्थ भासित होता है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : पर्याय क्रमबद्ध स्वकाल में उत्पन्न होती है, यह बात समझ में आई; परन्तु इसीप्रकार की यही पर्याय उत्पन्न होगी – यह बात इसमें कहाँ आई ?

उत्तर : पर्याय क्रमबद्ध स्वकाल में उत्पन्न होती है; इसमें पर्याय जिससमय निश्चित् होनेवाली है, वही उससमय होगी, ऐसा भी आ ही जाता है; क्योंकि स्वकाल में होनेवाली पर्याय को निमित्तादि किसी की भी अपेक्षा है ही नहीं।

प्रश्न : क्या क्रमबद्धपर्याय द्रव्य में गुंथित ही है ?

उत्तर : हाँ, क्रमबद्धपर्याय द्रव्य में गुंथी हुई ही है और इसे सर्वज्ञ भगवान प्रत्यक्ष जानते हैं। निम्नदशावालों को प्रत्यक्ष नहीं है, फिर भी उन्हें पर्याय क्रमबद्ध ही होती है – ऐसा अनुमान ज्ञान से ज्ञात होता है।

प्रश्न : केवली भगवान भूत-भविष्य की पर्यायों को द्रव्य में योग्यतारूप जानते हैं अथवा उन पर्यायों को वर्तमानवत् प्रत्यक्ष जानते हैं ?

उत्तर : प्रत्येक पदार्थ की भूत एवं भविष्यकाल की पर्यायें वर्तमान में अविद्यमान अप्रकट होने पर भी सर्वज्ञ भगवान वर्तमानवत् प्रत्यक्ष जानते हैं। अनन्तकाल पहले हो चुकी भूतकाल की पर्यायें और अनन्तकाल पश्चात् होनेवाली भविष्य की पर्यायें अविद्यमान होनेपर भी केवलज्ञान वर्तमान की तरह प्रत्यक्ष जानता है।

अहाहा ! जो पर्यायें हो चुकी और होनेवाली हैं – ऐसी भूत-भविष्य की पर्यायों को प्रत्यक्ष जाने उस ज्ञान की दिव्यता का क्या कहना ? केवली भगवान भूत भविष्य की पर्यायों को द्रव्य में योग्यतारूप जानते हैं – ऐसा नहीं है; किन्तु उन सभी पर्यायों को वर्तमानवत् प्रत्यक्ष जानते हैं; यही सर्वज्ञ के ज्ञान की दिव्यता है।

प्रश्न : आत्मा पर में कुछ फेरफार नहीं कर सकता – यह बात तो ठीक है; परन्तु अपनी पर्यायों में तो फेरफार कर ही सकता है – इसका अस्वीकार क्यों ?

उत्तर : अरे भाई ! जहाँ द्रव्य का निश्चय किया, वहाँ वर्तमान पर्याय स्वयं द्रव्य में तन्मय हो गई, फिर उसे क्या फेरना ? मेरी पर्याय मेरे द्रव्य में से आती है – ऐसा निर्णय करते ही पर्याय द्रव्य में अन्तर्मुख हो गई, अत: वह पर्याय अब क्रमसर निर्मल ही हुआ करती है और शान्ति वृद्धिंगत होती जाती है। इसप्रकार जहाँ पर्याय स्वयं द्रव्य में अन्तर्मग्न हुई, वहाँ उसे फेरना रहा ही कहाँ ? वह पर्याय तो स्वयं द्रव्य के वश में आ ही गई है। पर्याय आवेगी कहाँ से ? द्रव्य में से।

अत: जहाँ समूचे द्रव्य को काबू में ले लिया (श्रद्धा-ज्ञान में स्वीकार कर लिया), वहाँ पर्यायें काबू में आ ही गईं अर्थात् द्रव्य के आश्रय से पर्यायें सम्यक् निर्मल ही होने लगी। जहाँ स्वभाव का निश्चय हुआ, वहीं मिथ्याज्ञान विलीन होकर सम्यग्ज्ञान उद्भूत हुआ – मिथ्याश्रद्धा पलटकर सम्यक्श्रद्धा हुई।

इसप्रकार निर्मल पर्याय होने लगीं, वह भी वस्तु का धर्म है। वस्तुस्वभाव फिरा नहीं और पर्यायों की क्रमधारा भी टूटी नहीं। द्रव्य के ऐसे स्वभाव का स्वीकार करते ही पर्याय की निर्मलधारा प्रारम्भ हो गई और ज्ञानादि का अनन्त पुरुषार्थ उसमें आ ही गया।

स्व अथवा पर किसी द्रव्य को, किसी गुण को या उसकी किसी पर्याय को फेरने की बुद्धि जहाँ नहीं रही, वहाँ ज्ञान ज्ञान में ही ठहर गया अर्थात् वीतरागी ज्ञाताभाव ही रह गया – वहाँ अल्पकाल में मुक्ति होगी ही। बस ! ज्ञान में ज्ञातादृष्टापना रहना ही स्वरूप है, यही सबका सार है। अन्तर की यह बात जिसके चित्त में न आवे, उसको पर में या पर्याय में फेरफार करने की बुद्धि होती है। ज्ञाताभाव को चूककर कुछ भी फेरफार करने की बुद्धि ही मिथ्यात्व है।

प्रश्न : एक ओर तो पर्याय को क्रमबद्ध कहते हो और दूसरी ओर पर्याय से दृष्टि हटाने को भी कहते हो – ऐसा कैसे ?

उत्तर : पर्याय क्रमबद्ध होती है – ऐसा जाने तो पर्याय का कर्तृत्त्व छूटकर अकर्त्ता स्वभावी द्रव्य के ऊपर दृष्टि जाती है। क्रमबद्ध के ऊपर दृष्टि रखकर क्रमबद्ध का निर्णय नहीं होता। द्रव्य के ऊपर दृष्टि करने पर ही, क्रमबद्ध का सच्चा निर्णय होता है। अरे ! क्रमबद्ध तो सर्वज्ञ का प्राण है।

समाचार दर्शन -

दिल्ली में डॉ. भारिल्ल का दीक्षांत भाषण

दिल्ली : यहाँ घेवरा मोड स्थित अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के परिवर्तन दिवस (उपकार दिवस) के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट एवं श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 9 अप्रैल तक 11वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों में ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, डॉ. सुदीपकुमारजी, डॉ. वीरसागरजी, डॉ. अशोकजी गोयल, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ 600 से अधिक साधर्मियों को मिला।

शिविर में श्री महावीर जिनमंदिर में प्रतिदिन विधानों के क्रम में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान, श्री चन्द्रप्रभ पंचकल्याणक विधान, श्री शांति-कुंथु-अरनाथ पंचकल्याणक विधान, श्री सीमंधरस्वामी पंचकल्याणक विधान, श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान एवं श्री महावीर पंचकल्याणक विधान किया गया।

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की बालिकाओं द्वारा प्रतिदिन प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर विद्या निकेतन में 12वीं कक्षा की 13 कन्याओं का दीक्षांत समारोह भी आयोजित हुआ, जिसमें शारीरिक अस्वस्थता होने पर भी डॉ. भारिल्ल ने प्रेरक दीक्षांत भाषण दिया। सभी कार्यक्रमों का संयोजन ट्रस्ट के सहनिर्देशक पण्डित राकेशजी शास्त्री द्वारा किया गया। **– अजितप्रसाद जैन**

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचन सुनने हेतु –

प्रोजेक्टर/टीवी वितरण योजना

मुमुक्षु संस्थाओं द्वारा संचालित स्वाध्याय भवनों में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचनों को सुनने के लिये श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप वितरण योजना प्रारम्भ की गई है, जिसके अन्तर्गत संस्था को प्राप्त आवेदनों पर निर्धारित नियमों व प्रक्रिया के पश्चात् आवश्यकतानुसार मुमुक्षु संस्थाओं को प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप प्रदान किये जायेंगे। **प्राप्ति हेतु संपर्क करें –** विरागजी शास्त्री (संयोजक) 9300642434 एवं श्री शैलेष भाई शाह मुम्बई 022-26130820 Email : info@vitragvani.com

महावीर जयन्ती सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनांक 9 अप्रैल को प्रात: ध्वजारोहण पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं बापूनगर जैनसमाज के पदाधिकारी प्रो.नेमीचन्दजी जैन, श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी व डॉ. आर.के. जैन आदि के करकमलों द्वारा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सभी महानुभावों का तिलक लगाकर पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने स्वागत किया। इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के सभी छात्र व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्य भी उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नृत्य-गान करते हुए रथयात्रा लालकोठी मन्दिर पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयाजित सभा में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक उद्‌बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् रथयात्रा जयपुर शहर की मुख्य रथयात्रा में सम्मिलित हुई।

● श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर, जौहरी बाजार में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा भगवान महावीर के जीवन एवं सिद्धांतों पर प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला।

महिला मण्डल का विशेष कार्यक्रम

जयपुर : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयंती के पूर्व श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर द्वारा दिनांक 7 अप्रैल को महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में भगवान महावीर के सिद्धांत पर आधारित भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महिला मण्डल के सदस्यों द्वारा संगीतमय भक्ति-भजन के साथ बालक वर्धमान का जन्मोत्सव एवं विशिष्ट संवादों के माध्यम से रंगारंग प्रस्तुति दी गई।

हम सब इन सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारें और संस्कारी बनें, नई पीढी को कैसे संस्कारवान बनायें आदि विषयों के साथ आध्यात्मिक चर्चा द्वारा आत्मकल्याण का मार्ग प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में जयपुर समाज के अनेक महिला मण्डलों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुशीला जैन एवं श्रीमती ज्योति सेठी ने किया एवं मण्डल की सभी सदस्यों द्वारा कार्यक्रम की विशेष प्रस्तुति दी गई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ऑनलाइन संगोष्ठियाँ संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय द्वारा संचालित ऑनलाइन संगोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 26 मार्च को आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय ध्रुवधाम बांसवाड़ा के आयोजकत्व में श्री समयसार ग्रन्थ के बंध अधिकार के आधार से 'बंध से निर्बन्ध' विषय पर **10वीं ऑन लाइन संगोष्ठी** का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर एवं मुख्य अतिथि पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट थे। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. संजयजी शास्त्री परतापुर एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा थे।

संगोष्ठी में लेखों एवं बंधाधिकार से संबंधित आये हुये प्रश्नों के समाधान विद्वानों द्वारा दिये गये। संगोष्ठी का सफल संयोजन व संचालन डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने किया। सहयोगी के रूप में पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी', पण्डित शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, श्री संदीपजी जैन आत्मार्थी एवं डॉ. सुरभि खण्डवा थे।

11वीं ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 9 अप्रैल को पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की अध्यक्षता में एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के मुख्य आतिथ्य में किया गया। संगोष्ठी का विषय भगवान महावीर की जन्म जयंती के अवसर पर प्रासंगिक 'भगवान महावीर का सर्वोदयी तीर्थ' था। जिसमें विशिष्ट वक्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित अमितजी शाह मुम्बई थे।

इस संगोष्ठी में भगवान महावीर से संबंधित 15 विषय दिये गये, जिन पर लगभग 25 लेख प्राप्त हुये।

संगोष्ठी का सफल संचालन डॉ. प्रवीणजी शास्त्री एवं इंजी.संदीपजी आत्मार्थी ने किया। अन्त में आभार प्रदर्शन डॉ. अरविन्दजी भीलवाड़ा ने व्यक्त किया।

Ph.D. की उपाधि

जयपुर (राज.) निवासी **श्रीमती ज्योति सेठी धर्मपत्नी श्री संजयजी सेठी** को जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा **'वचनिकाकार पण्डित जयचन्द छाबड़ा का दार्शनिक योगदान : एक अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य हेतु पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध कार्य डॉ. रजनीश भारद्वाज के निर्देशन में पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध छ: अध्यायों में विभक्त है, जिसमें तत्कालीन परिस्थितियाँ, जैन वचनिका साहित्य और प्रमुख जैन वचनिकाकारों का परिचय, पण्डित जयचन्द छाबड़ा का जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व, पण्डित जयचन्द छाबड़ा की रचनाओं का परिचयात्मक अनुशीलन, पण्डित जयचन्द छाबड़ा के साहित्य में प्रमेय मीमांस, प्रमाण मीमांसा और आचार मीमांसा का समावेश किया गया है। जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का -

आदर्श विद्यार्थी पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय (सत्र 2016-17) की पाँचों कक्षाओं के आदर्श विद्यार्थियों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्री कैलाशजी सेठी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम में उपाध्याय कनिष्ठ से पवित्र जैन आगरा, उपाध्याय वरिष्ठ से सम्मेद खोत हुपरि, शास्त्री प्रथम वर्ष से जितेन्द्र जैन, शास्त्री द्वितीय वर्ष से अभय जैन खड़ैरी, शास्त्री तृतीय वर्ष से अनुभव जैन भिण्ड, चिकित्सा क्षेत्र में ज्ञायक जैन अमरमऊ को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त विशेष उन्नति पुरस्कार सिद्धांत शेट्टी उगार को एवं आदर्श कक्षा पुरस्कार उपाध्याय कनिष्ठ (40वाँ बैच) को दिया गया।

भक्तामर मंडल विधान सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जनता कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में ऋषभदेव जयंती के अवसर पर दिनांक 22 मार्च को अ.भा. जैन युवा महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम का संयोजन फैडरेशन की अध्यक्षा श्रीमती सुनीताजी कासलीवाल द्वारा श्रीमती नीलमजी एवं संस्कृतिजी गोधा के सहयोग से हुआ।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर अनेक वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश भ्रमण कर रहे हैं। यह इनकी नौवीं विदेश यात्रा है। इनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

25 मई से 1 जून 2017 तक **Miami**, 2 से 5 जून तक **Orlando**, 6 से 15 जून तक **Dallas**, 16 से 22 जून तक **Raleigh**, 23 से 30 जून तक **Chicago**, 1 से 4 जुलाई तक **Edison NY (JAINA Convention)**, 4 से 9 जुलाई तक **New Jersey (JAANA Shivir)**

पं. विपिनजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर भी विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। इनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

9 से 15 जून 2017 तक **Dallas**, 16 से 22 जून तक **Cleveland**, 1 से 4 जुलाई तक **Edison NY (JAINA Convention)**, 4 से 9 जुलाई तक **New Jersey (JAANA Shivir)**, 9 से 13 जुलाई तक **Chicago**

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का विदेश कार्यक्रम विगत अंक में प्रकाशित हो चुका है। तीनों विद्वानों को **(JAANA)** द्वारा आमंत्रित किया जाता है। विशेष जानकारी हेतु **www.jaana.org** पर देखें ।

- अतुलभाई खारा, डलास

ग्रीष्मकाल के अवकाशों के सदुपयोग का सुनहरा अवसर

समयसारमय हो जग सारा

समयसार परमागम का पठन-पाठन देशभर में हो, इसके लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा **'समयसारमय हो जग सारा'** नामक योजना प्रारम्भ की जा रही है।

इस योजना के अन्तर्गत जहाँ से आमंत्रण प्राप्त होंगे उन स्थानों पर 2 युवा विद्वानों की टीम भेजी जायेगी, जो वहाँ प्रात: समयसार विधान का आयोजन करेगी। सायंकाल सुविधानुसार पाठशाला/भक्ति/प्रवचन/सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। इस योजना में आसपास के स्नातकों एवं स्वाध्यायी विद्वानों का भी सहयोग लिया जायेगा।

आप भी अपने गाँव/शहर/मण्डल में 5 दिवसीय समयसार विधान का आयोजन करें। इसके लिये **आमंत्रण शीघ्र भेजें** - पीयूष जैन (संयोजक), समयसारमय हो जग सारा योजना, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 फोन-0141-2705581, 2707458, मो.-9785643202

वैराग्य समाचार

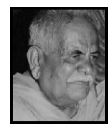

(1) करेली-नरसिंहपुर (म.प्र.) निवासी पण्डित कपूरचंदजी का दिनांक 17 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी, गुरुदेवश्री के अनन्य शिष्य एवं करेली मुमुक्षु मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष थे। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आपका अनन्य सहयोग रहा।

(2) टडा (म. प्र.) निवासी पण्डित कोमलचंदजी जैन की धर्मपत्नी **श्रीमती विमला जैन** का दिनांक 29 मार्च को समता भावपूर्वक देहावसान हो गया। आप तत्त्वरुचि संपन्न, मृदुभाषी महिला थीं। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविर में अनेक बार उपस्थित रहीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) सहारनपुर (उ.प्र.) निवासी श्री श्रीचन्द्रजी जैन का दिनांक 28 जनवरी को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

डॉ. संजीवजी गोधा का तूफानी दौरा

समाज के विशेष आमंत्रण पर बुन्देलखण्ड के अनेक गांवों में डॉ.संजीवजी गोधा द्वारा दिनांक 14 से 21 अप्रैल तक धर्मप्रभावना की गई।

इसके अन्तर्गत **गौरझामर** में 5, **गढाकोटा** में 6, **पथरिया** में 1, **खड़ैरी** में 5 एवं **फुटेरा** में 1 प्रवचन हुये। सभी स्थानों पर जिनागम के महत्वपूर्ण विषयों के आधार से प्रवचनों द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 713 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 86 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र Ph.D./Net/J.R.F. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 30 जून 2017 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **खनियांधाना में 21 मई से 7 जून, 2017 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल (प्राचार्य)

फॉर्म मंगाने का पता : – पण्डित शान्तिकुमार पाटील (उपप्राचार्य) (09413975133)
श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458, Email-ptstjaipur@yahoo.com

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में कहान नगर में बन रहे फ्लैटों का विहंगम दृश्य

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**